International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(I), July-September, 2026, pp. 61-65

''नगाड़ा'' – ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. ललित कुमार पंवार*

सहायक आचार्य इतिहास, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

*Corresponding Author: lalitkpanwar7@gmail.com

Citation: पंवार, ललित (2026). ''नगाड़ा'' – ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विवेचनात्मक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(I)), 61–65. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.3(I).9224

सार

नगाड़ा भारतीय लोक एवं शास्त्रीय परंपरा का एक प्राचीन तालवाद्य है, जिसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों, राजकीय घोषणाओं, युद्ध, लोकनाट्य तथा सांस्कृतिक आयोजनों में प्राचीन काल से होता रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में नगाड़े की उत्पत्ति, ऐतिहासिक विकास, संरचना तथा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में उसके प्रयोग का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि नगाड़ा केवल एक वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत, सामुदायिक जीवन एवं लोक परंपराओं का सशक्त प्रतीक है। साथ ही, आधुनिक समय में इसके बदलते स्वरूप, संरक्षण की आवश्यकता तथा सांस्कृतिक महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है। यह अध्ययन भारतीय संगीत एवं लोक–संस्कृति के ऐतिहासिक विकास को समझने में उपयोगी सिद्ध होगा।

शब्दकोशः *नगाड़ा, तालवाद्य, लोक–संस्कृति, ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक विरासत।*

प्रस्तावना

दमामां अर्थात् नगाड़े का पूर्व नाम संस्कृत में दुन्दुभि है और इसी को पाणव बंव और घोष भी कहते है। इस वाद्य को भारतीय चिरकाल से प्रयोग में लेते रहे है ऐसा अनेक पुस्तकों से सिद्ध है।

नगाड़े की उत्पत्ति के विषय में कुछ मतभेद है मगर यह तर्क और बुद्धि से निर्विवाद है कि दमामां ढोल से ही बना है। क्योंकि जितने भी चमड़े से मंड़े हुये वाद्य (मृदंग, ढोलक, तबला, आदि आदि) है वे सब ढोल की ही प्रशाखाये है। उदाहरण – ढोल से ढोलक और मृदंग बनी फिर इसी को बीच से काट, खड़े करने से तबले हो जाते है और दोनों सिरों के पास से काटकर बजावें तो खंजरियें बन जाती है जिससे इसका अलग रूप बनता है जिसका सार यह है कि उसे नगाड़ा कहा जाता है जिसे युद्ध के समय दो नगाड़े को घोड़े के दोनों हिस्सों में बंधा जाता है और इसे रणभूमि में सबसे आगे रखा जाता था।

राजा और प्रजा के बीच में आम और खास का भेद प्रारंभ से रहा है। जैसे प्रजा के इष्टदेव ठाकुरजी से राज्य के ठाकुरजी पृथक् होते है तथा प्रजा की धर्मनीति और शासक की राजनीति में अंतर होता है। इसी निति के आधार पर जब ढोल प्रजा की मुख्य वस्तु बन गई तो सत्ताधारियों ने नगाड़ा (दमामां) अपने अनुसार रखकर उसका महत्त्व और बढ़ा दिया। यही कारण है कि नगाड़े प्रायः राजद्वार और देवद्वार (ठाकुरद्वारा–मंदिरादि) में होते और बजते है। प्रजा में प्रतिष्ठित व्यक्ति केवल विवाह के अवसर पर नगाड़ा बजवा

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

सकते है। शादी के अतिरिक्त आड़े (अन्य) दिनों में नगाड़ा बजवावे तो आज भी सब रियासतों में दंड के भागी होते है।

मुसलमान बादशाहों के यहां भी नगाड़ा मान सूचक बजता रहा है। राजा महाराजाओं को शाही दरबार से प्रायः खिलत में नगाड़ा, नेज़ा, ढाल, तलवार, हाथी, घोड़े ही मिलते थे। जैसे वि.सं. 1684 आषाढ़ बदि 4 को खुर्रम (शाहजहां) ने जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंहजी को उपरोक्त वस्तुये भेंट की।

इसी शाहजहां बादशाह ने कई सरदारों को नगाड़े निशान दिये। वे ठिकाने ''नगारबंद'' कहलाते है। नगाड़ा निशान शाही मुरबत होने के कारण वे ही ठिकाने रखते है। जिनको बड़े राजाओ की ओर से प्राप्त हो या बादशाहों ने उन्हें बक्षा हो। सार यह है कि माननीय ठिकानों की मोटी तीन पहिचान है –

- नगाड़ा निशान काम में लेते हों।
- घंटा घड़ियाल बजती हों।
- शराब स्वयं निकाल पाते हों।

बड़ी रियासतों में चौपहरे (प्रातः, मध्याहन, साय, अर्द्धरात्रि) नगाड़े बजते है। यह रिवाज अकबर के समय से चला है। (देखो अकबरी दरबार भा. 1 पृष्ठ संख्या 113) रियासत करौली के राजचिह्न में ढाल है, जिसके बायें में भेड़ और दायीं तरफ शेर है ढाल के बीच में गाय है और उसके बाये कोने पर नगाड़ा है तथा ऊपर हिरण का सिर है। इसके (ढाल) नीचे ''श्री मदनमोहनजी सहाय'' (मोटोज़) लिखा हुआ है। सार यह है कि श्रीकृष्ण भगवान् के वंशजों के प्रधान करौली के राजचिह्न में में नगाड़ा को स्थान दिया गया है।

अजमेर राज्य में उस समय के बने नगारबंद 12 ठिकाने थे, मगर अब 14 है। यह प्रथम श्रेणी के इस्तमुरारदार कहलाते है। द्वितीय श्रेणी के ठिकानों में पाटवी या बड़े ठिकाने से नगाड़ा प्राप्त करते।

दूसरा उदाहरण – वि. संवत 1658 में दलेलखां नामक मुग़ल सेनाध्यक्ष ने मेवाड़ पर चढ़ाई की तब महाराणा प्रतापसिंहजी ने बदनोर के ठाकुर मनमनदासजी राठौड़ (मेड़तिया) को सेनापति बनाकर युद्धार्थ भेजा। अंत में राजनगर के पास दोनों दलों की तलवारें बजी, मेवाड़ सेनापति राठौड़ ने घोड़े को उड़ा हाथी पर बैठे दलेलखां को बर्छी से मारा।

अस चढियों कमधज अनड़, मुग़ल कठेरा मांहि।
मार दियो मुकनेसरा, बलवंत बर्छी बांहि।।

इस बहादुरी के उपलक्ष्य में मुकनदासजी के पुत्र मनमनदासजी को महाराणा प्रताप ने संतुष्ट हो आज्ञा प्रदान करी कि आज से तुम्हारा नगाड़ा सदैव हरावल (सेना के अग्रभाग) में बजा करेगा। (देखो जयमल वंश प्रकाश भाग – पृष्ठ संख्या 181)

नगाड़े के भेद

राजस्थान में प्रायः चार प्रकार के नगाड़े होते है, इनमें एक अचल (स्थाई) और तीन चल होते है।

- प्रथम राज्य स्थापित करते या किला बनवाते समय शुभ मुहूर्त में झण्डा खड़ा किया जाता है और इसी के साथ एक बड़ा नगाड़ा बजाया जाता है और फिर झण्डे की बरैख (कपड़ा) खोली जाती है। इसको ''धौंसा'' (धूसों) कहते है। यह हमेशा किले में ही बजता है बाहर नहीं जाता। अक्सर सभी ''धौंसो'' (धूसों) पर राज्य स्थापन के साल सम्बत आदि खुदे होते है। और दूसरे का छीना हुआ धौंसा भी संबत–सहित इसी के पास सुरक्षित रखा जाता है।
- अस्मी – उस नगाड़े को कहते है जो घोड़े पर कसा (बांधा) जाता है।
- सुतरी – ऊंट पर लादकर बजाया जाता है।
- रणजीत – यह बड़े नगाड़े होते है जो हाथी पर और घोड़ें पर रखे जाते है।

सेना के अग्रभाग में ''अस्मी'' और अंतिम (पीछे) सिरे पर ''सुतरी'' नगाड़ा रहता है। और ''रणजीत'' हमेशा राजा के पास रहता है जो प्रायः विजय के वक्त ही बजता है। शेष ''अस्मी'' और ''सुतरी'' निश्चित संकेतों से समस्त सेना को आगे पीछे के हमलों से सचेत रहने की चेतावनी देते रहते है।

यह क्रम शाही सेना और सवारियों में भी रहा जो राजपूतों से ही सिखा था। यवन सेना के नगारची ''मिरासी'' कहलाते थे। जो अस्मी नगाड़े पर बैठते निम्न मन्त्र बोला करते थे – (देखों सेंसर रिपोर्ट मारवाड़ सन् 1891 ई. पृष्ठ संख्या 370)

शेर शमशेर शेरानशेर, बहादुर अवारा।
घोड़े और मेरे में जोश है, नगाड़ा हमारा।।

राजपूतों की सेना में नगारची (रणधवल) क्षत्रियों के समीप ही रहते थे। आज भी नगाड़ा, पीढ़ियों से भरोसामंद दमामी रणधवल के अलावा अन्य को नहीं संभलाया जाता। राजस्थान में ऐसे सैकड़ों उदाहरण है कि मुख्य दमामी के मरने पर राजपूतों ने नगाड़े के घोड़े पर चढ़कर स्वयं युद्ध कार्य को संभाला।

(2) विक्रम संवत 1715 में किशनगढ़ नरेश रूपसिंहजी शाहजहां के कहने से उसके पुत्र दारा शिकोह के पक्ष में लड़े। इस अवसर में 3 पीढ़ी धौला खांप के नगारचियों की काम आ गई तब ''बाम्बोलाव'' (किशनगढ़ राज्य का प्रधान ठिकाना) के ठाकुर कुम्भकर्णजी उस नगाड़े को जो युद्ध में छिन गया था लेकर आये। इसी पर महाराजा ने फरमाया कि आपने मेरा नाक रखा इसीलिये बिना आपकी उपस्थिति के दरबार, भविष्य में भी नहीं किया जायेगा। (देखो – तवारीख किशनगढ़)

आदि बातों का मुख्य सार यह है कि राजपूतों का नगारची हल्की कौम का नहीं होता है। यह रणकुशल नायक के साथ रण के अग्रिम पंक्ति में उपस्थित होने वाला वीर था इसलिए इनको रणधवल कहते थे।

नगाड़ा से सम्बन्धित कविता

मार करि पातशाही खाक सारी कीन्हीं जिन,
जेर कीन्हीं जोरसों लै हद्द सब मारे की।
खिसी गई शेखी सब फिसि सुरताई सब,
हिलि गई हिम्मती हजारों लोग सारे की।।
बाजत दाममें लाखों धौंस आगे धहरात,
गरजत मेघ ज्यूँ बरात चढ़े भारे की।
दुल्हे हो शिवाजी भयो दच्छिन दमामें वारे,
दिल्ली दुलहिन भई शहर सितारे की।।

(2)

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठे बार बार,
दिल्ली दहसत्ति चितै चाह करपत्ति है।
बिलखि बदन बिलखाय विजयपुर पति,
फिरत फिरंगिनी की नारी फरकत्ति है।।
थर थर कांपत कुतबशाह गोलकुण्डा,
हहरि हबस भूप भीर भरकत्ति है।
राजा शिवराज के नगारन की धाक सुनि,
कैतै बादशाहन की छाती धरकत्ति है।।

रणजीत नगाड़ा

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी स्वरचित ''कवितावाली'' नामक पुस्तक में कई स्थानों पर ढोल और नगाड़े की कविताये लिखी है। प्राचीन काल में जब युद्ध के लिये अपने सामंतों और जनता को एकत्रित करना होता था तब नगाड़े को महल के सबसे ऊँचे स्थान पर रख कर बजाया जाता था। उस रहस्यमयी नगाड़े की गुंजार को वारु (पुकारना) कहते आये है। और उसके साथ नृसिंह, शंख, घंटादि सब झंकार को रणभेरी कहते है। अंग्रेज लोग जो प्रायः खुशी के समय हुर्रा (निततीं) शब्द का प्रयोग करते है यह रणभेरी के हीरो (नगारची) का अपभ्रंश है देखो – (शुद्धि चंद्रोदय पृष्ठ संख्या 55)।

एक बार श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी (पंजाब प्रांत से) की सेना के वरिष्ठ अधिकारी नन्दचन्द ने अनुरोध पर नगाड़ा बजाते सेना का प्रशिक्षण करना तय किया। बस फिर क्या था तुरन्त गुरू जी ने आदेश दिया कि आकार में बड़े से बड़ा नगाड़ा बनवाओ और इसके अतिरिक्त शिकार खेलते समय वनों में जंगली पशुओं को भयभीत करने के लिए कुछ छोटे आकार के नगाड़े बनवाओ जो साथ लिए जा सके और शिकार करने में सहायक सिद्ध हो। आदेश के मिलते ही कुशल कारीगरों द्वारा एक बहुत ही बड़े आकार का नगाड़ा बनाया गया जिसकी गूँज और कर्कश ध्वनि गगनचुम्बी थी। इसे देखकर गुरू जी ने प्रसन्नता व्यक्त की और इस नगाड़े का नाम रणजीत नगाड़ा रखा और इसे श्री आनंदगढ़ की एक विशेष ऊँची मीनार में स्थापित कर दिया गया था।

आनंदपुर (सतलुज किनारे) का युद्ध दिसम्बर 1695 की कड़ाके की सर्दी। दिवाकर खान के पुत्र नईम खान आनंदपुर कर आधी रात में आक्रमण किया, तब भाई आलम सिंह ने निंद्रा में लीन गुरु गोविन्द सिंह जी को जगाकर खबर दी। गुरुदेव ने आदेश दिया कि रणजीत नगाड़ा बजा दिया जाए ताकि खामोशी टूट जाये और पूरा नगर जग जाये। योद्धाओं ने शस्त्र धारण कर लिये घोड़ों पर सवार होकर कूच कर दिवाकर खान की फौज पर टूट पड़े और जीत हासिल की।

कई कवियों ने नगाड़े को काव्यों में स्थान दिया है, जिससे इसका पूर्वकालीन गौरव बना हुआ है। उनमें से कुछ नमूने के तौर पर प्रकाशित कर लेख समाप्त किया जाता है –

इन दोनों कवितों में कवि ''भूषण'' ने वह चित्र खींचा है जबकि छत्रपति शिवाजी ने दिल्ली पर हमला किया। अब यह कवित बूंदी नरेश राव भाऊसिंहजी के दरबार कवि ''मतिराम'' का रचित है ।

(कवित्त)

बाजत नगाड़े जहां गाजत गयंद तहां,
सिंह सम कीनों वीर संगर विहार है।
कहै मतिराम कवि लोगन को रीझि करी,
दीन ते दुरद जे चुवत मदधार है।।
शत्रु शाल नन्द राव भाऊसिंह तेग त्याग,
तौसे और औनितल आजु न उदार है।
हाथिन बिदारबे को हाथ है हथियार तेरे,
दारिद बिदारवे की हाथी हथियार है।।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मारवाड़ का इतिहास, पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ, पृष्ठ–168।
2. कवितावली, तुलसीदास जी।
3. टॉड कृत राजस्थान भाग–2।
4. शुद्धि चंद्रोदय पृष्ठ संख्या–55।

5. जयमल वंश प्रकाश भाग–पृष्ठ संख्या 181।
6. सेंसर रिपोर्ट मारवाड़ सन् 1891 ई. पृष्ठ संख्या 370।
7. तवारीख किशनगढ़।
8. राज परिजन परिचय, रमेशचन्द्र गुणार्थी, पृष्ठ 84–88।
9. अकबरी दरबार भाग–1, पृष्ठ संख्या 313।

❑❑❑